उसे पहचानने में देर न हो जाये..

भारत में हर दिन को किसी न किसी त्योहार के रूप में मनाया जाता है। जबकि अन्य किसी भी देश में ऐसा देखने में नहीं आता। ऐसा हो भी क्यों ना! इसके पीछे ये भाव समाहित है कि भारत में स्वयं परमात्मा ने अवतरित होकर सारे विश्व को सुख शांति समृद्धि से भरपूर किया था। ये परमात्मा की कर्त्तव्य भूमि रही है। वास्तव में अगर देखा जाए तो सारी मनुष्य आत्माओं का मिलन अपने प्यारे पिता परमात्मा से इसी दौरान हुआ, जिसको हम शिव जयंती या शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। इसी के कारण कई लोग व्रत रखते हैं, पूजा करते हैं, बेलपत्र चढ़ाते हैं, ताकि उनकी मनोकामना पूरी हो जाए। परंतु देखा गया है हर साल अपनी भावनाओं से सबकुछ करते हुए भी उन्हें जीवन में ना तो शांति और ना ही सुख मिल पाता है। आज हम आपको ये बताना चाहते हैं कि परमात्मा से सुख शांति कैसे मिलेगी। परमात्मा को यथार्थ जाने बिना वो मिलेगी भी कैसे!

- ब्र.कु. गंगाधर

किसी से भी कुछ प्राप्ति करनी हो, तो परिचय, पहचान व समय महत्व रखता है। आज हम भावना वश उन्हें पूजते हैं, याद भी करते हैं, लेकिन सही अर्थ में उसे पहचानते नहीं। जैसे कि हम चित्रों को भी देखें तो जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण, शंकर व शिवलिंग। तो आपको उन चारो में अंतर दिखाई देता है ना! सभी तो एक समान ही नहीं हैं ना! वास्तव में जिसका चित्र है, उसका चरित्र भी ज़रूर होगा। जैसै राम का चित्र मानस पटल पर आते ही उनका चरित्र हमारे नैनों के सामने उभर आता है। ऐसे ही सभी का है। लेकिन ये भी देखा गया है कि श्रीराम ने भी रामेश्वरम में शक्ति अर्जित करने के लिए शिव की पूजा की। श्रीकृष्ण ने भी गोपेश्वर में शिवलिंग की पूजा-अर्चना की। शंकर को भी शिवलिंग के सामने तपस्यामूर्त ही दिखाते हैं। तो शिव सभी देवों के भी आराध्य हैं। अब हम शिव के बारे में जाने-अनजाने भी दो बात सदा कहते हैं। एक कहते हैं 'सदा शिव'। दूसरा है 'सत्यम शिवम सुंदरम'। परंतु हम उसे सही अर्थ में जान नहीं पाते। ना जानने के कारण उससे सम्बन्ध भी स्थापित नहीं होता। जहाँ सम्बन्ध नहीं, वहाँ प्राप्ति भी कैसे संभव है! तो आइये आज हम ये जान लें कि परमात्मा से हमारा नाता 'पिता और पुत्र' का है। तभी तो कहते हैं ना कि 'त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव'। तो ज़रूर सम्बन्ध है तभी तो गाते हैं ना। तो परमात्मा, जो शांति का सागर है, प्रेम का सागर है, शक्ति का पुंज है, ज्ञान का भण्डार है, फिर हम क्यों इन सब चीज़ों से वंचित हैं! ये सब सोचने की बात है ना। तो हम शिवलिंग को महाज्योति के रूप में बताते हैं। परमज्योति माना प्रकाश। जैसे परमात्मा का रूप ज्योति है, सदा कल्याणकारी, ऐसे ही हमारा रूप भी ज्योति है। परम ज्योति से ज्योति का मिलन होने पर ही आत्म ज्योति में प्रकाश प्रवाहित होगा, जैसे पावर हाउस से बल्ब के कनेक्शन में ऊर्जा प्रवाहित होने पर ही बल्ब प्रकाशित होता है।

यहाँ हम बताना चाहते हैं कि समय चक्र में परमात्मा का इस धरा पर अवतरण सतयुग के आदि और कलियुग के अंत के समय, यानि संगम पर होता है। जहाँ हम कलियुग में परमात्मा को भूल गये, हम उनसे दूर होते गये, तो हम दु:खी हुए। यदि आज हम विश्व पर दृष्टिपात करें, तो हर चीज़ अति में दिखाई दे रही है, तमोप्रधानता दिखाई दे रही है। ऐसे में यही परमात्मा के सृष्टि में आने, और फिर से हम पतित मनुष्यों को पावन बनाने के कल्याणकारी कर्त्तव्य करने का सही समय है। इसी के यादगार रूप में कई लोग इसे शिवजयंती कहते हैं, और कई शिवरात्रि कहते हैं। शिव जयंती अर्थात् परमात्मा का दिव्य अवतरण। शिव पुराण में ये लिखा है कि मैं वृद्ध मानव के तन में प्रवेश करता हूँ, और सारी सृष्टि में

- शेष पेज 4 पर...

मन परमात्मा में लगाने से मैलापन दूर हो, स्वच्छता आ जायेगी

हम बच्चों ने अपने आप को परमात्मा बाप के आगे समर्पित कर दिया है। दिल से निकलता यह तन भी तेरा, मन भी तेरा.... मन ने बाबा को समझ लिया तो समर्पण हो गए। देह सम्बन्ध सब विनाशी हैं। मनुष्य आत्मायें अनेक हैं, परमात्मा एक है- यह बाबा ने इतना अच्छा समझाया, जो दूसरों को समझाने की कला आ गई। कुदरत के नियम अनुसार बच्चा पैदा होता है, बड़ा होता है, पढ़ता है। बाबा ने हमको बच्चा बनाया है। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को जैसे अपना बना लिया तो हम बच्चों को भी अपना बनाने में देर नहीं लगाई। फिर कहता है बच्चे अच्छी तरह से पढ़ो तो पढ़ाने लायक बन जायेंगे और अन्दर वो गुण वा शक्ति आती जाएगी। जब मन कहता है बाबा मैं तेरा हूँ तो मन किसका हुआ! इस तन में आत्मा कहती है बाबा मैं तेरा हूँ। मन तभी कहता है बाबा मैं तेरा हूँ जब बुद्धि मान लेती है। फिर बुद्धियोग भटकता नहीं है। मन बड़े प्यार से बाबा को अच्छी तरह से पहचानता है। ऐसा नहीं मन दु:खी हो गया, रोगी हो गया फिर कहता है मैं तेरा हूँ।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

मन महसूस करता है। बुद्धि में समझ आई है कि मन को बाप की तरफ लगाने से ही मैलापन जाएगा। मेरा-मेरा मैला बनाता है, तेरा-तेरा स्वच्छ बनाता है। तेरा कहा, स्वच्छ हो गए। मेरा कहा, तो फँस गए। तेरा कहा, तो छूट गये। ऐसे ही कार्य व्यवहार में भी तेरा। बाबा के पास आने से समझ आ जाती है हम कौन हैं? भागवत में जो चरित्र पढ़ते थे वही रिपीट हो रहे हैं। जो ज्ञान लोप हो गया था वही रिपीट हो रहा है। हम वही गोप-गोपियां हैं। सामने जो बात आ रही है वही हो रहा है। 'नथिंग न्यू'। विघ्न आना भी बड़ी बात नहीं है। हम ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण कहलाते हैं, तो अपने अलौकिक जन्म को देख दिव्यता ला रहे हैं। जब तक अलौकिक महसूस नहीं होता तब तक दिव्यता नहीं आ सकती। ये हमारा जन्म ही अलौकिक है। कभी यह शब्द मुख से न निकले कि मैंने सहन किया है या मुझे सहन करना पड़ता है। ये शब्द मुख से बोलना अपने स्वमान से नीचे उतर जाना है। बाबा ने कभी भी यह शब्द नहीं बोला है। कितनी बातें बाबा के सामने आई और गई, बाबा के मुख से ऐसे शब्द कभी नहीं सुने। चेहरे पर वह चिन्ह कभी नहीं देखा। तन को भी नहीं कह सकते कि तकलीफ देता है। जैसे भगवान के चरित्रों का गायन है, ऐसे हम बाबा के बच्चे हैं, तो हमारे भी चरित्र ऊँचे हों। तब ही तो पास विद् ऑनर होंगे।

बाबा ने हम बच्चों को समझ दी है कि जितना तुम्हारी आत्मा पावन होती जायेगी उतना भविष्य स्पष्ट दिखाई देगा। जैसे बाबा का भविष्य हमको दिखाई पड़ता आ रहा है। लेकिन इसके लिए गुप्त अभ्यास हो। और सब बातों मे न जाकर सिर्फ अपने आप को जानकर पहचान कर साक्षात् बाप के समान बनो। बाप का यही आदेश है। इस बात को सारे दिन में एक मिनट भी न भूलो।

बाप साथ, तो माया आ नहीं सकती

बाबा ने कहा परमात्मा के लव में लीन सहज कौन रह सकता है? जो सर्व सम्बन्ध से और प्राप्तियों में भरपूर होगा। जिससे गहरा सम्बन्ध होता है वह भूलते भी नहीं भूलता है, बार-बार याद आता है और जहाँ से कोई प्राप्ति होती है तो प्राप्ति वाला भी नहीं भूलता है। अगर बाबा भूल भी जाता है तो उसका कारण, या तो सम्बन्ध में कुछ कमी है या प्राप्ति स्मृति में नहीं है, इसलिए बाबा कहते हैं सिर्फ प्यार होवे नहीं, लेकिन प्यार में लवलीन रहो यानी स्नेह में समाये रहो। जो लवलीन है उसकी निशानी क्या होगी? उसको कभी बाबा भूल ही नहीं सकता है। जो प्राप्ति हमें हुई है वह दूसरों को भी हो, इसी लगन में हम लगे हुए हैं।

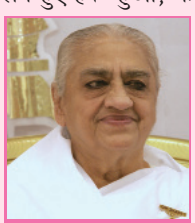
दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा कहता है सदा मुझे साथ रखो, मुझे साथी बनाओ। अकेला कभी नहीं बनना। बाबा हमारे दिल में सदा याद है तो कभी भी माया आ नहीं सकती है। जहाँ लाइट होती है वहां पाप नहीं होता। वैसे भी अगर कोई डाकू आता है तो वह पहले लाइट का कनेक्शन काटेगा, फिर सबको अलग-अलग करेगा। सब साथ होंगे तो फिर उनको डर रहता है। तो हमारे साथ हमारे दिल में अगर सदा बाबा हो, कहते भी हैं भगवान साथ है तो आंधी-तूफान क्या करेगा! अगर कोई पावरफुल साथ होता है तो डर नहीं होता है। तो सदा आप सबके साथ बाबा है, या कभी-कभी अकेले हो जाते हो? स्वयं लाइट हाउस बाबा अगर हमारे साथ है तो माया की क्या हिम्मत है आने की। फिर हम सदा निर्विघ्न रहेंगे। इस अवस्था में रहने से मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि माया दूर से ही भाग जाती है। अकेले होने से ही व्यर्थ संकल्प चलते हैं, व्यर्थ संकल्प ऐसे होते हैं जो जल्दी खत्म नहीं होते हैं, बार-बार आते हैं। और खास बाबा की याद के टाइम अमृतवेले आते हैं। माया उसी समय कोशिश करती है सामने आने की। लेकिन अगर हमारे साथ लाइट हाउस है तो माया की हिम्मत नहीं हो सकती, व्यर्थ संकल्प भी नहीं आ सकते। आजकल की रिज़ल्ट में बुरे संकल्प कम हो गये हैं, लेकिन व्यर्थ बहुत चलते हैं। छोटी-छोटी बात में क्यों, क्या, कैसे.... माया की भाषा कै-कै की है। यह क्यों करते, क्या हुआ, कैसे हुआ, कब तक होगा.... यह कै-कै की भाषा होगी। यह माया की भाषा खत्म हो जाए, उसका साधन यह है कि बाबा के साथ रहें। बाबा ने हम सबको पहला-पहला लेसन यह सिखाया कि तुमको भगवान मिला है तो खुशी, सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद से भरपूर रहो। लोग तो भगवान से यही मांगते हैं। तो बाबा ने हमको पाठ पढ़ाया कि तुम भिन्न-भिन्न वृक्ष की टालियां मेरे पास आईं। अभी इन सब टालियों को एक चन्दन का वृक्ष बनना है। जो चन्दन का वृक्ष बनेगा, उसकी शाखा बनेगा तो उसमें क्या होना चाहिये? तुम्हारा चेहरा सदा खुशमिजाज होना चाहिये। खुशमिजाज भी खुशनसीब भी क्योंकि भगवान के बने हो। खुशी के बिना जीवन ही क्या है। बाबा ने हमको कहा-बच्ची, तुम्हारा चेहरा ऐसा होना चाहिये जैसे खिले हुए गुलाब का पुष्प, सदा खुशनुमा।

ना देह अभिमान हो, ना देह-भान

वर्तमान समय सभी का पुरुषार्थ है कि हम बाप समान फरिश्ता बनें, अव्यक्त बनें। एंजिल्स सभी को बहुत प्यारे लगते हैं। सभी अनुभव करते हैं कि साकारी से आकारी स्थिति बनने में, एंजिल्स बनने में, उस लक्ष्य को धारण करने में कितना सुन्दर अनुभव होता है! एंजिल्स की स्थिति कितनी मीठी होती है! साक्षात्कार में भी सभी को विशेष एंजिल्स का अनुभव होता है। लेकिन हमें आकारी स्थिति के साथ-साथ निराकारी स्थिति का भी विशेष अनुभव करना है। क्योंकि बाप निराकार है, आत्मा भी निराकार है और हम सबको चलना भी निराकारी दुनिया में है। स्वीट होम को साइलेन्स होम भी कहते हैं। वहाँ से ही विष्णुपुरी का गेट खुलना है। आकारी दुनिया से हम वाया होने वाले हैं। परन्तु वाया होंगे भी तब जब सम्पूर्ण पवित्र बनेंगे। तो एंजिल्स माना ही कम्पलीट प्योर। कम्पलीट प्योर बनकर ही शान्तिधाम जाना है और विद् ऑनर जाना है। हम सबकी बुद्धि में यह लक्ष्य है कि हमें ऐसी स्थिति में जाना है जो कोई सज़ा न खानी पड़े। बाबा ने भी कहा कि लक्ष्य रखो तो लक्षण आयेंगे। लक्ष्य ही है हमें बाबा के समान बन, बाबा के पास बाबा के घर जाना है। हम सब आत्माओं का स्वीट होम वही है। कई बार कहते हैं कि शान्ति की गहरी अनुभूति हो। साइलेन्स इज़ पावर कहते हैं। तो यह साइलेन्स की अनुभूति, साइलेन्स की पावर तब अनुभव होगी जब हमारी यह प्रैक्टिस रहेगी कि हम आत्मा बिन्दु हैं। जितना-जितना हम अपने को निराकारी आत्मा समझेंगे उतना देह का भान मिटता जाएगा। यह देह का भान बहुत मोटा है। एक है देह का अभिमान रखना, एक है देह का भान रखना। तो न देह के अभिमान में रहना है और ना ही देह के भान में आना है। इन दोनों से अपने को मुक्त कर लेना है। इसका नाम है राजयोग, न अहम् का अहंकार चाहिए, न अहम् का अभिमान चाहिए, न अहम् का नशा चाहिए। इस अभिमान से, इस अहंकार से

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

खुद को बहुत-बहुत दूर निरहंकारी बनाना है। निरहंकारी बनने का साधन ही है खुद को निराकारी बनाओ। निराकारी स्थिति में जाने से निरहंकारी, निरहंकारी से निर्विकारी बनेंगे। यदि स्थिति नीचे-ऊपर होती है, तो इसका कारण ही है कि देह का कोई भान है। स्थिति नीचे है माना कोई न कोई तेरे, मेरे, इम्प्योरिटी, लगाव, झुकाव, इच्छा, सूक्ष्म माया के संकल्प-विकल्प में , चिन्तन में, व्यर्थ की फीलिंग है। पहले बुद्धि देहभान में जाएगी तब कोई बात की फीलिंग आएगी। अगर रात-दिन बुद्धि में एक ही बात का लक्ष्य रहे कि मुझे अब देह के भान से परे आत्म अभिमानी बनना है, तो किसी भी प्रकार की फीलिंग से परे रहेंगे और हमेशा खुश भी रहेंगे।